

भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 33]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 16, 1989/कार्तिक 25, 1911

No. 33]

NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 16, 1989/KARTIKA 25, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 नवम्बर, 1989

सं० 12-18/89-सी.सी.एच./3392:—होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम 1973, की धारा 33 के खण्ड (अ) और (ट) और धारा 20 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद् केन्द्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात्:—

भाग-1

प्रारम्भिक

- संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ:—(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम) एम.डी. (होम्यो.) विनियम, 1989 है।
(2) ये भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- परिभाषाएं:—इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,
(क) “अधिनियम” से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (1973 का 59) अभिप्रेत है,
(ख) “पाठ्यक्रम” से होम्योपैथी के निम्नलिखित पाठ्यक्रम अभिप्रेत है, अर्थात्:—
(1) एम.डी. (होम्यो.) (होम्योपैथी में आयुर्विज्ञान वाचस्पति)—मैग्रीस्था मेडिका।

- (2) एम.डी. (होम्यो.) (होम्योपैथी में आयुर्विज्ञान वाचस्पति)---होम्योपैथी दर्शन ।
- (3) एम.डी. (होम्यो.) (होम्योपैथी में आयुर्विज्ञान वाचस्पति)---रेपरटर ।
- (ग) “एम.डी. (होम्यो.)” से विनियम 3 के उप-विनियम (1) में यथा विहित होम्योपैथी में स्नातकोत्तर डिग्री (होम्यो-पैथी में आयुर्विज्ञान वाचस्पति) अभिप्रेत है,
- (घ) “होम्योपैथी महाविद्यालय” से किसी विश्वविद्यालय से संबद्ध और केन्द्रीय परिषद् मान्यताप्राप्त कोई होम्योपैथी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय या संस्था अभिप्रेत है,
- (ङ) “निरीक्षक” से अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई आयुर्विज्ञान निरीक्षक अभिप्रेत है,
- (च) “परिदर्शक” से अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया परिदर्शक अभिप्रेत है,
- (छ) “अध्यक्ष” से केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद् का अध्यक्ष अभिप्रेत है,
- (ज) “अनुसूची” से अधिनियम से उपाबद्ध अनुसूची अभिप्रेत है,
- (झ) “पाठ्य विवरण” और “पाठ्यचर्या” से इन विनियमों के अधीन यथा विहित विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यविवरण और पाठ्यचर्या अभिप्रेत है,
- (ञ) “अध्यापन अनुभव” से केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त किसी होम्योपैथी महाविद्यालय या अस्पताल का अध्यापन का अनुभव अभिप्रेत है,

भाग-2

पाठ्यक्रम

- (1) स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम निम्नलिखित विषयों में होंगे :—

- (1) एम.डी. (होम्यो.)—मेटीरिया मेडिका
(2) एम.डी. (होम्यो.)—होम्योपैथी दर्शन ।
(3) एम.डी. (होम्यो.)—रेपरटर ।

- (2) प्रत्येक पाठ्यक्रम तीन वर्ष की अवधि का होगा जिसमें एक वर्ष की गृह शिक्षता या उम्मेदवार भी है ।

- (3) प्रत्येक पाठ्यक्रम में निम्नलिखित होंगे :—

- (क) एम.डी. (होम्यो.)—मेटीरिया मेडिका

- (1) मेटीरिया मेडिका
(2) आयुर्विज्ञान अभ्यास
(3) होम्योपैथिक दर्शन और औषधि ज्ञान-साधन
या
रेपरटर, और

- (4) अनुसंधान पद्धति और आंकड़े ।

- (ख) एम.डी. (होम्यो.)—होम्योपैथी दर्शन

- (1) होम्योपैथी दर्शन और आयु-
विज्ञान ज्ञान-साधन ।

- (2) आयुर्विज्ञान अभ्यास
(3) मेटीरिया मेडिका

या
रेपरटर, और

- (4) अनुसंधान पद्धति और आंकड़े ।

- (ग) एम.डी. (होम्यो.)—रेपरटर

- (1) रेपरटर,
(2) आयुर्विज्ञान अभ्यास,
(3) मेटीरिया मेडिका

या

होम्योपैथी दर्शन और आयुर्विज्ञान ज्ञान-साधन, और

- (4) अनुसंधान पद्धति और आंकड़े ।

भाग-3

पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. (1) किसी भी अभ्यर्थी को एम.डी. (होम्यो.) पाठ्यक्रम में तब तक प्रवेश नहीं दिया जा सकता जब तक कि उसने :—
- (1) होम्योपैथी में पांच वर्ष छह मास अवधि का पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात् दी गई स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की हो या जिसमें गृह शिक्षता भी हो, या
 - (2) होम्योपैथी में कम से कम 2 वर्ष अवधि के पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात् दी गई ग्रेजुएट डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण की हो, या
 - (3) होम्योपैथी में कम से कम 4 वर्ष अवधि के पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात् डिप्लोमा परीक्षा जिसमें गृह शिक्षता भी दी गई हो, उत्तीर्ण की हो।
- (2) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले अभ्यर्थी का चयन विश्वविद्यालय द्वारा योग्यता क्रम के आधार पर किया जाएगा। जिस अभ्यर्थी ने ग्रामीण क्षेत्र में कम से कम दो वर्ष तक काम किया हो उसे अधिमानत दी जा सकती है।

भाग-4

पाठ्य विवरण

5. स्नातकोत्तर डिग्री (एम.डी. होम्यो.) के लिए पाठ्य-विवरण :

एम.डी. (होम्यो.) पाठ्यक्रम के लिए निम्नलिखित पाठ्य विवरण होगा, अर्थात् :—

- (1) मेडिरिया मैडिका :—उन सभी औषधियों का ज्ञान हो जो होम्योपैथी नैदानिक चिकित्सा में प्रयोग में आती हैं। मेडिरिया मैडिका का अध्ययन ऐसी रीति से किया जाएगा जिससे कि निम्नलिखित की समझ आ सके :
- (1) होम्योपैथी मेडिरिया मैडिका का स्वरूप और परिचय।
 - (2) होम्योपैथी मेडिरिया मैडिका का स्रोत और रचना।
 - (3) होम्योपैथी मेडिरिया मैडिका को अन्य चिकित्सा-पद्धतियों से तुलना :
 - (क) मेडिरिया मैडिका प्योरा :
 - (1) सभी स्रोतों, पुस्तकों से होम्योपैथी औषधियों के शुद्ध प्रभावों का अध्ययन और उनकी व्याख्या।
 - (2) नई व आंशिक रूप से प्रमाणित औषधियों का औषधि परीक्षण।
 - (ख) अनुप्रयुक्त मेडिरिया मैडिका :
 - (1) मेडिरिया मैडिका के प्रयोग में अंतर्ग्रस्त तत्वों (होम्योपैथी दर्शन, नैदानिक औषधियाँ, होम्योपैथी रेपरेटर और मेडिरिया मैडिका प्योरा),
 - (2) मेडिरिया मैडिका के अध्ययन के विभिन्न तरीके, जैसे मनो-वैज्ञानिक-नैदानिक रोग वैज्ञानिक, संश्लिष्ट, तुलनात्मक विशेषात्मक और उपचार संबंध,
 - (3) आंशिक प्रमाणित विभिन्न होम्योपैथी औषधियों के नैदानिक परीक्षण के आधार पर क्लिनिकल क्षमता की जांच,
 - (4) अन्तः रोगों का होम्योपैथी से उपचार।

- (2) चिकित्सा अध्ययन :

- (1) गहन रोग जिनमें छूत रोग भी हैं उनके कारण मात्रा रोग परीक्षा विज्ञान, नैदानिक प्राकट्य निदानसूचक तरीके, जटिलताएं और मेडिरिया मैडिका से उपचार
- (2) पुराने विषजन्य रोग :—मेडिरिया मैडिका के प्रयोग में शारीरिक दशाएं, एक तरफा रोग, स्थानीय रोग जिसमें शल्य संबंधी और शल्य रहित रोग भी हैं, मानसिक असंतुलन उनके कारण, मात्रा रोग परीक्षा विज्ञान, नैदानिक प्राकृत्य रोग निर्णय संबंधी रीति, जटिलताएं और मेडिरिया मैडिका द्वारा उनका उपचार।

- (3) निर्विषजन्य दशाएं :

सामाजिक और सामुदायिक औषधियाँ जिसमें वृत्ति संबंधी और वातावरण सम्बन्धी रोग भी हैं, जन्म निरोध और परिवार कल्याण जहां प्रशासक और मशीनी चिकित्सा की आवश्यकता हो वहां शल्य संबंधी और अन्य दशाएं।

(3) होम्योपैथी दर्शन और औषधि ज्ञान साधन :

सामान्यतया हृदयमान की विचाराधारा के विशेष संदर्भ में उसके सभी लेखकों सहित और विशेषतया मानव संबंधी जीवन की अखिल विश्व विचाराधारा मस्तिष्क संबंधी विश्व-विचाराधारा, भौतिक विश्व और उसके विभिन्न स्वरूप, उसके विभिन्न तत्व और उनसे संबंध ।

मानव जाति का मूल मनोविज्ञान

सामान्य विचार—कारण तथा परिणाम—प्रभाव

स्वास्थ्य संबंधी गतिशील विचाराधारा, रोग और उपचार, होबीय विचाराधारा और व्यष्टीकरण विचार धारा, समानता के सिद्धांतों द्वारा असन्तुलन—सन्तुलन रोग निर्धारण के तरीके ।

होम्योपैथी मेडिरिया मेडिका के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग, प्रत्येक औषधि के गुणों के प्रभाव का अध्ययन । औषधि इतिहास ।

होम्योपैथी की उत्पत्ति और चिकित्सा के क्षेत्र में उसकी स्थापना ।

वर्तमान सन्दर्भ में होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का क्षेत्र और सीमाएं ।

औषधि ज्ञान-साधन के विभिन्न स्वरूपों का आलोचनात्मक अध्ययन ।

(4) रेपरटरि :

(1) होम्योपैथी चिकित्सा में रेपरटरि के विकास का ऐतिहासिक और आलोचनात्मक अध्ययन ।

(2) रेपरटरि के विभिन्न लेखकों, जैसे, बोनीहासन, बोगर-बोमीहासन केन्ट, कार्ड रेपरटरि इत्यादि के विचारानुसार रेपरटरि की रचना ।

(3) होम्योपैथी चिकित्सा की दृष्टि से रोगियों की चिकित्सा (केस टेकिंग) ।

(4) रोगों के लक्षण की पूर्ण उप-धारणा ।

(5) लक्षणों का अंकन और लक्षणों के विश्लेषण और निर्धारण के भिन्न तरीके ।

(6) रेपरटरि के प्रयोग का क्षेत्र और सीमाएं ।

(7) विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार में अलग-अलग रेपरटरियों के प्रयोग की विधि ।

(5) अनुसंधान की विधि और आंकड़े :

(1) चिकित्सा आंकड़ों का आधारी ज्ञान ।

(2) सांख्यिकी में नए प्रयोगों की सहायता से होम्योपैथी में अनुसंधान कार्य की प्रकृति और वर्गीकरण ।

(3) व्याख्यात्मक अनुसंधान कार्य

या

पुष्टिकारक अनुसंधान कार्य

या

प्रयोगात्मक अनुसंधान कार्य ।

भाग—5

परीक्षाएं

(6)(1) परीक्षा दो भागों में आयोजित की जाएगी, अर्थात् :—

(क) एम.डी. (होम्यो.) भाग—1

(ख) एम.डी. (होम्यो.) भाग—2

(2) प्रत्येक अभ्यर्थी जो भाग 1 की परीक्षा में प्रवेश चाहता है विश्वविद्यालय को निम्नलिखित के साथ आवेदन करेगा :—

(क) अपने मार्ग दर्शक से उन विषयों का अध्ययन पूर्ण करने का प्रमाण-पत्र जिनमें वह परीक्षा में प्रवेश के लिए वांछा करता है, और

(ख) मान्यता प्राप्त अस्पताल से एक वर्ष गृह शिक्षुता (हाउस जाब) पूर्ण करने का प्रमाण-पत्र ।

(3) प्रत्येक अभ्यर्थी को जो भाग 2 की परीक्षा में प्रवेश चाहता है, कम से कम 10000 शब्दों का शोध निबंध प्रस्तुत करना शोध निबंध मौखिक परीक्षा का आधार होगा ।

7. भाग—1 एम.डी. (होम्यो.) परीक्षा :

प्रत्येक विषय के लिए पूर्णांक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे :—

(क) एम.डी. (होम्यो.) (मेडिरिया मैडिका)

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	उत्तीर्णांक	योग
मेडिरिया मैडिका प्युरा	200	100	100	200	400
आयुर्विज्ञान अभ्यास, रोग हर शास्त्र सहित	100	25	25	75	150
आयुर्विज्ञान ज्ञान-साधन और होम्योपैथी दर्शन या रेपरटोरि	100	25	25	75	150
अनुसंधान पद्धति और आंकड़े	100	—	—	50	100
(ख) एम.डी. (होम्यो.) होम्योपैथिक दर्शन :					
होम्योपैथिक दर्शन और औषधि ज्ञान-साधन	200	100	100	200	400
चिकित्सा अभ्यास रोग-हर शास्त्र सहित	100	25	25	75	150
मेडिरिया मैडिका या रेपरटोरि	100	25	25	75	150
अनुसंधान की पद्धति और आंकड़े	100	—	—	50	100
(ग) एम.डी. (होम्यो.) रेपरटोरि :					
रेपरटोरि	200	100	100	200	400
चिकित्सा अभ्यास रोग-हर शास्त्र सहित	100	25	25	75	150
मेडिरिया मैडिका या होम्योपैथिक दर्शन और औषधि ज्ञान-साधन	100	25	25	75	150
अनुसंधान की पद्धति और आंकड़े	100	—	—	50	100

8. एम.डी. (होम्यो.) भाग 2 परीक्षा :

(1) प्रत्याषी को भाग 2 की परीक्षा होने से कम से कम नौह माह पूर्व अपने मार्गदर्शक के पास सोध निबंध देना होगा जिसका मूल्यांकन मार्गदर्शक भाग 2 की परीक्षा के कम से कम छह मास पूर्व करेगा ।

(2) प्रत्येक अभ्यर्थी को जो भाग 2 की परीक्षा में प्रवेश लेना चाहता है, अपना आवेदन-पत्र निम्नलिखित के साथ विश्व-विद्यालय को देना होगा :—

(क) भाग 1 परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण-पत्र, और

(ख) मार्ग दर्शक से उन विषयों में अध्ययन पूर्ण करने का प्रमाण-पत्र जिनमें वह परीक्षा के लिए प्रवेश चाहता है ।

(3) प्रत्येक विषय के लिए पूर्णांक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे :—

(क) एम.डी. (होम्यो.) मेडिरिया मैडिका :—

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	उत्तीर्णांक	योग
मेडिरिया मैडिका प्युरा प्रश्न पत्र I	100	100	100	200	400
मेडिरिया मैडिका नैदानिक प्रश्न पत्र II	100				
चिकित्सा अभ्यास	100	50	50	100	200
औषधि विज्ञान साधन और दर्शन	100	25	25	75	150
रेपरटोरि	100	25	25	75	150
(ख) एम.डी. (होम्यो.) होम्योपैथी दर्शन :					
होम्योपैथी दर्शन	100	100	100	200	400
चिकित्सा अभ्यास	100				
औषधि ज्ञान साधन	100	50	50	100	200
मेडिरिया मैडिका	100	25	25	75	150
रेपरटोरि	100	25	25	75	150

(ग) एम.डी. (होम्यो.) रेपरटर :

विषय	*लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	उत्तीर्णक	या
रेपरटर प्रश्न-पत्र I	100	100	100	200	400
“ “ “ II	100				
चिकित्सा अभ्यास	100	50	50	100	200
मेटरिया मेडिका	100	25	25	75	150
होम्योपैथी दर्शन और औषधि ज्ञान साधन	100	25	25	75	150

9. स्नातकोत्तर अध्यापन केन्द्र के लिए अपेक्षाएँ :

(क) अध्यापन केन्द्र को पूर्ण स्नातक प्रशिक्षण के लिए होम्योपैथी (न्यूनतम शिक्षा-स्तर) विनियम 1983 में विहित न्यूनतम अपेक्षाओं को पूरा करना होगा। एम.डी. पाठ्यक्रम आरम्भ करने से पूर्व केन्द्र को केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद् से मूल्यांकन और अनुमोदन प्राप्त करना होगा।

(ख) स्नातकोत्तर विभाग के पास अनुशंगिक विभागों की पूरी सुविधाएँ होनी चाहिए।

10. प्रशिक्षण :—

(1) प्रशिक्षण की अवधि :

एम.डी. के प्रशिक्षण की अवधि पूर्ण पंजीकरण के पश्चात् 3 वर्ष होगी जिसमें एक वर्ष की गृह शिक्षता अथवा उसके समकक्ष भी है।

(2) प्रशिक्षण की विधि :

प्रशिक्षण में पढ़ाने की पद्धति से दिए गए व्याख्यातों की ओर अंतःस्था प्रशिक्षण पर जोर दिया जाना चाहिए। अभ्यर्थी को संगोष्ठियों, समूह वादविवादों, नैदानिक अधिवेशनों आदि में भाग लेना चाहिए। अभ्यर्थी से विस्तृत वृत्तान्त के साथ एक शोध प्रबंध या शोध निबंध लिखने की अपेक्षा की जाएगी जिसमें कि वह शोध पद्धतियों और तकनीकों तथा अनुसंधान पत्र लिखने और सीखने की कला और पुस्तकालय का प्रयोग करने की विधि की आवश्यक पृष्ठभूमि प्रशिक्षित हो सके। अभ्यर्थी विद्यालय परिसर का निवासी रहेगा और उसको सौंपे गये सभी रोगियों के उपचार और वेजभाल के प्रबंध का वर्गीकृत उत्तरदायित्व भी उस पर होगा। वह पूर्व स्नातक छात्रों और गृह प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण और अध्यापन के कार्यक्रम में भाग लेगा। इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त संख्या में नैदानिक रेसीडेंट और ट्यूटर्स के पदों का नृजन किया जाएगा।

11. परीक्षा में (1) लिखित पत्र (2) मौखिक परीक्षा जिसमें प्रयोग भी हैं, और (3) नैदानिक परीक्षा (नैदानिक विषयों में) सम्मिलित होंगे।

12. (1) छात्र-मार्गदर्शक अनुपात :

छात्र और मार्गदर्शक का अनुपात 3 : 1 (तीन छात्र व एक मार्गदर्शक) होगा।

(2) मार्गदर्शक के चयन के लिए मानदंड

मार्गदर्शक के चयन के लिए मानदंड निम्नलिखित होगा।

(क) शैक्षिक अर्हताएँ :—

डी.एच.एम.एस. या उसके समकक्ष,

या

बी.एच.एम.एस. या उसके समकक्ष।

(ख) अनुभव : कम से कम 20 वर्ष का वृत्तिक अनुभव जिसमें—

(i) डिप्लोमा या डिग्री पाठ्यक्रम चलाने वाले किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालयों में कम से कम 10 वर्ष का अध्यापन का अनुभव

या

(ii) अधिनियम की तीसरी अनुसूची में सम्मिलित अर्हता तथा उसके साथ किसी मान्यता प्राप्त चार-वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम या डिग्री पाठ्यक्रम चलाने वाले होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय में 10 वर्ष का अध्यापन का अनुभव।

13. परीक्षक :

- (1) परीक्षकों के लिए मानदंड मार्गदर्शकों के लिए मानदंडों के समान होंगे।
- (2) विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षकों की सूची दो वर्ष के लिए बनाई जाएगी और उनका अनुमोदन केन्द्रीय परिषद द्वारा किया जाएगा।
- (3) परीक्षकों की सूची में से एक परीक्षक को मार्गदर्शक नियुक्त किया जाएगा।
- (4) परीक्षकों में से कम से कम 50 प्रतिशत बाह्य परीक्षक होने चाहिए।

भाग--6

बाह्य अभ्यर्थियों के लिए विशेष उपबन्ध :--

इन विनियमों में अन्तर्लिखित किसी बात के होते हुए भी, इन विनियमों के प्रारम्भ के आठ वर्ष की अवधि तक विश्व-विद्यालय निम्नलिखित शर्तों के पूरा होने के अधीन रहते हुए बाह्य अभ्यर्थियों को स्नातकोत्तर परीक्षा में बैठने की अनुमति देगा।

14. परीक्षा में प्रवेश :--

- (1) वह अभ्यर्थी जिम्ने होम्योपैथी में कम से कम चार वर्ष की अवधि का डिप्लोमा पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण की हो और जो निम्नलिखित शर्तों में से किसी एक का पूरा करता हो, परीक्षा में बाह्य छात्र के रूप में बैठने का पात्र होगा :--
 - (क) वह कम से कम सहायक प्रोफेसर की पंक्ति के पूर्णकालिक पद पर नियमित पद धारण करता हो, या
 - (ख) उसके पास कम से कम सात वर्ष का मान्यता प्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में अध्यापन कार्य का अनुभव हो, या
 - (ग) दस वर्ष का वृत्तिक अनुभव है।
- (2) अभ्यर्थी को अन्तिम परीक्षा के कम से कम दो वर्ष पूर्व अपना नाम रजिस्टर कराना होगा।
- (3) अन्तिम परीक्षा के आयोजन के कम से कम नौ मास पूर्व अभ्यर्थी को अपना शोध निबन्ध तैयार करके मार्गदर्शक को देना होगा। अन्तिम परीक्षा के कम से कम छह मास पूर्व मार्गदर्शक उसका अनुमोदन करेगा।

15. परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्र - :

परीक्षा में निम्नलिखित प्रश्न-पत्र होंगे :--

- (क) मेडिरिया मंडिका
(मेडिरिया मंडिका प्युरा और अपलाईड)
- (ख) होम्योपैथी चिकित्सा -- अभ्यास (प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान सहित)
- (ग) औषधि ज्ञान-साधन और दर्शन
- (घ) रेपरट्रि

16. परीक्षक :--

परीक्षकों के लिए मानदंड इन विनियमों के विनियम 13 के अनुसार होगा।

डा. पी. एल. वर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY

NOTIFICATION

New Delhi, the 16th November, 1989

No. 12-18/89-CCH/3392 :--In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section (1) of section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy with the previous sanction of the Central Government hereby makes the following regulations, namely :--

PART I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement :—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Post Graduate Degree Course) M.D. (Hom.) Regulations, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions :—In these regulations, unless the context otherwise requires:—

- (a) "Act" means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973);
- (b) "course" means the following course of study in Homoeopathy, namely :—
 - (i) M.D. (Hom.) (Doctor of Medicine in Homoeopathy)—Materia Medica.
 - (ii) M.D. (Hom.) (Doctor of Medicine in Homoeopathy)—Homoeopathic Philosophy.
 - (iii) M.D. (Hom.) (Doctor of Medicine in Homoeopathy)—Repertory.
- (c) "M.D. (Hom.)" means a post graduate degree in Homoeopathy (Doctor of Medicine in Homoeopathy) as prescribed in sub-regulation (1) of regulation 3;
- (d) "Homoeopathy college" means a Homoeopathic medical college or an institute affiliated to a University and recognised by the Central Council for post graduate course;
- (e) "inspector" means a medical inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act;
- (f) "visitor" means a visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act;
- (g) "President" means the President of the Central Council;
- (h) "Schedule" means the Schedule annexed to the said Act;
- (i) "syllabus" and "curriculum" means the syllabus and curriculum for different courses of study as prescribed by the Central Council under these regulations;
- (j) "teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic college or in a hospital recognised by the Central Council.

PART II

COURSES OF STUDY

3. (1) Post Graduate Degree Courses shall be in the following subjects:—

- (a) M.D. (Hom.)
Materia Medica.
- (b) M.D. (Hom.)
Homoeopathic Philosophy.
- (c) M.D. (Hom.)
Repertory.

(2) Each course shall be of three years duration including one year of house job or equivalent thereof.

(3) Each course shall comprise of the following :—

- | | |
|---|--|
| <ul style="list-style-type: none"> (a) M.D. (Hom.)
Materia Medica | <ul style="list-style-type: none"> (i) Materia Medica; (ii) Practice of Medicine; (iii) Homoeopathic Philosophy, Organon of Medicine |
| OR | |
| | <ul style="list-style-type: none"> Repertory; and (iv) Method of Research and Statistics. |
| <ul style="list-style-type: none"> (b) M.D. (Hom.)
Homoeopathic Philosophy | <ul style="list-style-type: none"> (i) Homoeopathic Philosophy and Organon of Medicine; (ii) Practice of Medicine; (iii) Materia Medica |
| OR | |
| | <ul style="list-style-type: none"> Repertory; and (iv) Method of Research and Statistics. |

(c) M.D. (Hom.)
Repertory.

(i) Repertory;
(ii) Practice of Medicine;
(iii) Materia Medica

OR

Homoeopathic Philosophy and Organon of Medicine; and
(iv) Method of Research and Statistics.

PART III

ADMISSION TO COURSE

4. (1) No candidate shall be admitted to M.D. (Hom.) course unless he has :—

- (i) Passed the Degree Examination obtained after under-going a course of study in Homoeopathy of not less than 5-1/2 years duration including the period of compulsory internship; or
- (ii) Passed the Graded Degree Examination obtained after undergoing a course of study in Homoeopathy of not less than 2 years; or
- (iii) Passed the Diploma Examination in Homoeopathy obtained after undergoing a course of study in Homoeopathy of not less than 4 years duration including the period of compulsory internship.

(2) Candidates for post graduate course shall be selected by the University on merit. Preference may be given to a candidate who has worked in rural areas for atleast two years.

PART IV

SYLLABUS

5. Syllabus for Post Graduate Degree (M.D. Hom.): The following shall be the syllabus for M.D. (Hom.) course, namely :—

(1) MATERIA MEDICA :

Knowledge of all the drugs used in clinical homoeopathic practice. The Materia Medica shall be studied in the manner so as to understand :

- (i) the nature and scope of Homoeopathic Materia Medica.
- (ii) the sources and construction of Homoeopathic Materia Medica.
- (iii) comparison of Homoeopathic Materia Medica with other systems of Medicine.

(a) Materia Medica Pura :

- (i) to study pure effects of Homoeopathic drugs from all the sources, books and to interpret the same.
- (ii) to conduct the drug-proving with new or partially proved drugs.

(b) Applied Materia Medica :

- (i) The element involved in the application of Materia Medica (Homoeopathic Philosophy Clinical Medicine, Homoeopathic Repertory and Materia Medica Pura).
- (ii) Different approaches of study of Materia Medica i.e. Psycho-clinico-Pathological, Synthetic, Comparative, Analytic and Remedy Relationship.
- (iii) To as-certain the clinical efficacy of various Homoeopathic drugs by clinical trial of partially proved drugs.
- (iv) Homoeopathic management of iatrogenic diseases.

(2) PRACTICE OF MEDICINE :

- (i) Acute diseases including infectious diseases, their causes, courses, pathology, clinical manifestation, diagnostic procedures, complications and management with applied materia medica.
- (ii) Chronic Miasmatic Diseases : Systemic conditions, one sided diseases, local diseases inclusive surgical and non-surgical diseases, psychiatric disorders, their causes, course, pathology, clinical manifestation, diagnostic procedure, complications and management with application of materia medica.

- (iii) Non-Miasmatic Conditions: Social and community medicines including occupational and environmental diseases, ante-natal and family welfare, surgical and other conditions where palliative or mechanical treatment is needed.

(3) HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY AND ORGANON OF MEDICINE :

Universal concept of life in general and human being in particular, with special reference to Hahnemannian concept with all his related writings, universal concept of mind, physical world, different expressions of physical world, its different components and their relationship.

Basic psychology of human being.

Concept-Causation-Effect

Dynamic concept of Health, Disease and Cure. Holistic concept and the concept of individualisation. DISHARMONY——HARMONY through principles of Similia. Methods of framing portrait of disease.

Application of Philosophy in study of Homoeopathic Materia Medica, Personality profile of every drug. History of Medicine. Emergence of Homoeopathy and its establishment in the field of medicine. Scope and limitations of Homoeopathic System of Medicine as understood today.

Critical study of different editions of Organon of Medicine.

(4) REPERTORY :

- (i) Historical and critical study of evolution of Repertory in Homoeopathic practice;
- (ii) Construction of Repertory with the concept from various authors of Repertory, viz., Boenninghausen, Boger-Boenninghausen, Kent, Card Repertory, etc;
- (iii) Case taking from Homoeopathic point of view;
- (iv) Concept of totality of symptoms;
- (v) Evaluation of symptoms and different approaches to analysis and evaluation of symptoms;
- (vi) Scope and limitations of the use of Repertory;
- (vii) Method of using different Repetories for various type of illnesses.

(5) METHOD OF RESEARCH AND STATISTICS :

- (i) Basic knowledge of medical statistics.
- (ii) Nature and classification of research work in Homoeopathy with the help of recent advancements in statistics.
- (iii) Explanatory research work,
OR
Confirmatory research work,
OR
Experimental research work.

PART V

EXAMINATIONS

6.(1) The examination shall be conducted in two parts, namely :—

- (a) M.D. Hom. Part I.
- (b) M.D. Hom. Part II.

(2) Every candidate seeking admission to Part I of the examination shall submit application to the University with the following, namely :—

- (a) a certificate from his guide about the completion of the courses of studies in the subjects in which the candidate is seeking admission to the examination; and
- (b) a certificate of having completed one year's house job in a recognised Hospital.

(3) Every candidate seeking admission to the Part II of the examination shall submit a dissertation of not less than 10000 words. The dissertation shall form the basis of viva-voce examination.

7. Part-I M.D. Hom. Examination : Full marks for each subject and minimum number of marks required for a pass shall be as follows —

(a) M.D. (Hom.) Materia Medica :

Subject	Theory	Viva-voice	Practical	Pass marks	Total
Materia Medica Pura	200	100	100	200	400
Practice of Medicine with therapeutics	100	25	25	75	150
Organon of Medicine and Homoeopathic Philosophy or Repertory	100	25	25	75	150
Methods of Research and Statistics	100	—	—	50	100

(b) M.D. (Hom.) Homoeopathic Philosophy :

Homoeopathic Philosophy and Organon of Medicine	200	100	100	200	400
Practice of Medicine with therapeutics	100	25	25	75	150
Materia Medica or Repertory	100	25	25	75	150
Methods of Research and Statistics	100	—	—	50	100

(c) M.D. (Hom.) Repertory :

Repertory	200	100	100	200	400
Practice of Medicine with Therapeutics	100	25	25	75	150
Materia Medica or Homoeopathic Philosophy and Organon of Medicine	100	25	25	75	150
Method of Research and Statistics	100	—	—	50	100

8. M.D. Hom. Part II Examination : (1) The candidate shall prepare and submit to his guide a dissertation atleast nine months prior to the holding of Part II Examination. The guide shall evaluate the same atleast six months prior to the holding of Part II examination.

(2) Every candidate seeking admission to Part II of the examination shall submit an application to the University with the following, namely :—

- a certificate showing that he has passed Part I Examination; and
 - a certificate from his guide about the completion of studies in the subjects in which the candidate is seeking admission to the examination.
- (3) Full marks for each subject and minimum number of marks required for a pass shall be as follows : —
- (a) M.D. (Hom.) Materia Medica :

Subject	Theory	Viva-voce	Practical	Pass marks	Total
1	2	3	4	5	6
Materia Medica Pura Paper I.	100	100	100	200	400
Materia Medica Clinical Paper II	100				
Practice of Medicine	100	50	50	100	200

1	2	3	4	5	6
Organon of Medicine and Philosophy	100	25	25	75	150
Repertory	100	25	25	75	150
(b) M.D. (Hom.) Homoeopathic Philosophy.					
Homoeopathic Philosophy	100	100	100	200	400
Organon of Medicine	100				
Practice of Medicine	100	50	50	100	200
Materia Medica	100	25	25	75	150
Repertory	100	25	25	75	150
(c) M.D. (Hom.) Repertory :					
Repertory					
Paper I	100	100	100	200	400
Paper II	100				
Practice of Medicine	100	50	50	100	200
Materia Medica	100	25	25	75	150
Homoeopathic Philosophy and Organon of Medicine.	100	25	25	75	150

9. Requirements for a Post-Graduate Teaching Centre :—

(a) The Centre shall fulfil the minimum requirements as prescribed in the Homoeopathy (Minimum Standards of Education) Regulations, 1983 for undergraduate training. The Centre shall obtain evaluation and approval from the Central Council before starting of M.D. Course.

(b) Post-graduate department shall have all facilities of ancillary departments.

10. Training :

(1) Period of Training : The period of training for M.D. shall be 3 years after full registration including one year of house job or equivalent thereof.

(2) Method of Training : The emphasis should be on inservice training and not on didactic lectures. The candidate should take part in seminars, group discussions, clinical meetings etc., The candidate should be required to write a thesis or dissertation with detailed commentary which should provide the candidate with necessary background of training in research methods and techniques alongwith the art of writing research papers and learning and making use of library. The candidate shall be a resident in the campus and shall be given graded responsibility in the management and treatment of patients entrusted to his care. He shall participate in teaching and training of undergraduate students or interus. Adequate number of posts of clinical residents or tutors shall be created for this purpose.

11. The examination shall consists of (i) written papers; (ii) oral including practical and (iii) clinical (in clinical subjects).

12. (1) Student-Guide Ratio :

Student Guide Ratio : 3:1 (three students one guide).

(2) Criteria for the selection of Guide :

Criteria for the Guide shall be :—

(a) Educational qualification : DHMS or its equivalent ; or BHMS or its equivalent.

(b) Experience : Professional standing of not less than 20 years out of which :—

(i) he shall possess teaching experience of not less than 10 years in a recognised Homoeopathic College running diploma (DHMS) or degree (BHMS) Course;

OR

(ii) he shall possess qualification included in the Third Schedule to the Act, with 10 years teaching experience in a Homoeopathic Medical College conducting recognised diploma course of four years duration or degree course.

13. Examiners :

- (1) The criteria for examiners shall be the same as of the Guide.
- (2) A panel of examiners shall be prepared by the University for a period of two years which shall be approved by the Central Council.
- (3) One of the examiners out of the panel shall be appointed as guide.
- (4) At least 50% of the examiners shall be external examiners.

PART VI

SPECIAL PROVISION FOR EXTERNAL CANDIDATES

Notwithstanding anything contained in these regulations the University shall allow the external candidates to appear in the Post Graduate examination for a period of eight years from the commencement of these regulations subject to fulfilment of the following conditions—

14. Admission to Examination :

- (1) A candidate who has passed the final examination of a diploma course in Homocopathy of not less than four years duration and fulfils any of the following conditions shall be eligible for admission to the examination as an external candidate :—

(a) holds full time regular post not below the rank of Assistant Professor,

OR

(b) has teaching experience of not less than seven years in a recognised Homoeopathic Medical College,

OR

(c) has ten years professional experience.

- (2) The candidate shall register his name atleast two years before the final examination.
- (3) The candidate shall prepare and submit to his guide a dissertation atleast nine months prior to the holding of the final examination. The guide shall approve the same at least six months prior to the holding of the final examination.

15. Papers for examination :

The examination will comprise of the following papers :—

- (a) Materia Medica—(Materia Medica Pura and Applied).
- (b) Homoeopathic Practice of Medicine (including Gynae and Obstetrics).
- (c) Organon of Medicine and Philosophy.
- (d) Repertory.

16. Examiners :

The criteria for examiners shall be as given in regulation 13 of these regulations.

Dr. P.L. VERMA, Secy.

